वरिवस्यारहस्यम्

:: लेखकद्वय ::
श्री. किशोरीशरण चऊदा
दतिया
श्री. डॉ. योगेश मिश्रा

:: संपादक ::
श्री. डॉ. योगेश मिश्रा
जयपुर

20

:: प्रकाशक ::
श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद् दतिया (म. प्र.)

प्रकाशक : श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्
दतिया (म. प्र.)

प्रथम संस्करण : सन् १९९१

मूल्य : १०) रुपये

मुद्रक : रा. का. बेडेकर
व्यवस्थापक
शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि.,
ग्रेट नाग रोड, नागपुर–९

॥ श्रीः ॥

वरिवस्यारहस्यम्

प्रथमोंशः

मङ्गलाचरण

विद्यानां च मनूनां मनुसंख्यानां च विद्यानाम् ।
उपदेष्टा जयतितरां नरसिंहानन्दनाथ गुरुः ॥
वरिवस्यारहस्याख्यो ग्रन्थो यः स्वेन निर्मितः ।
तत्र दुर्घटशब्दानामर्थः संक्षिप्य कथ्यते ॥

भावार्थ– चौदह मनु होने के कारण मनु शब्द से चतुर्दश का ही अर्थ लगता है। श्री नरसिंहानन्दनाथ इन चौदह विद्याओं एवं उनके मन्त्रों के उपदेष्टा हैं, इसलिए उनकी जय हो। यह "वरिवस्या-रहस्य" नामक ग्रन्थ स्वयं उनके ही द्वारा रचा गया है। हम इसके कठिन शब्दों का संक्षेप में कथन करते हैं।

टीका– "तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत" (मु. उ. २–१२) 'आचार्यवान्पुरुषो वेद' (छा. उ. ६–१४–२) उक्त श्रुति वचनानुसार आचार्यवान पुरुष ही ब्रह्म को जानता है, और जिज्ञासु को तत्वज्ञान के हेतु गुरु के समीप जाना चाहिए। अतएव सब विघ्नों के नाश के हेतु हम सर्वप्रथम 'सकलमन्त्राधिष्ठातृदेवताऽपररूपं' श्री गुरु नरसिंहानन्दनाथ की स्तुति करते हैं, जिनकी आज्ञा से यह सम्प्रदाय प्रवर्त्तमान है।

व्याख्या– मन्त्रशास्त्र के अनुसार शक्तिपरक मन्त्रों को विद्या तथा शिवपरक और पुरुष देवताओं के मन्त्रों को मन्त्र कहा जाता है–

शक्त्याद्या तु भवेद्विद्या शिवाद्यो मन्त्र उच्यते ।
दीक्षाभिषेक पूता तु प्राणिनां भुक्ति मुक्तिदा ॥
– शारदा तिलक

श्री पीताम्बरा पीठ
ह्रीं
दतिया (म.प्र.)